हिन्दी गद्य साहित्य और जयशंकर प्रसाद

डॉ0 शीशम साहु
असिस्टेंट प्रोफेसर,
गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय,
गढ़वा, झारखण्ड,
नीलाम्बर–पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनीनगर, पलामू।

हिन्दी साहित्य की लेखन की परंपरा 9वीं, 10वीं शताब्दी से ही प्रारम्भ हो गई थी, किन्तु हिन्दी साहित्य में गद्य का विकास 19वीं शताब्दी के आसपास माना जाता है। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल गद्य साहित्य का काल था। यहीं कारण था कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस काल को ''गद्य काल'' कहा। सन् 1800ई0 में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई जिसमें हिन्दी और उर्दू के अध्यापक के रूप में जॉन गिल क्राईस्ट की नियुक्ति हुई। लल्लू लाल एवं सदल मिश्र दोनों ही फोर्ट विलियम कॉलेज में थे। हिन्दी गद्य के विकास में इस कॉलेज की अहम भूमिका रही। तथापि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी गद्य का जनक कहा जाता है। भारतेन्दु जी ने जिस नाट्य कला को हिन्दी गद्य साहित्य में जन्म दिया, प्रसाद जी ने उसे पल्लवित एवं विकसित करने का कार्य किया।

बहुमुखी प्रतिमा के धनी जयशंकर प्रसाद (1889–1957ई0) हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, कहानीकार एवं नाटककार हैं। उनके ऐतिहासिक नाटक हिन्दी में मिल के पत्थर सिद्ध हुए हैं। भारत के स्वर्णिम अतीत को अपने नाटकों की कथा वस्तु बनाकर उन्होनें एक ओर तो भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को महत्व दिया है तो दूसरी ओर ऐतिहासिक पृष्ट भूमि का आधार ग्रहण करते हुए अतीत के पट पर वर्तमान का चित्र अंकित किया है। प्रसाद जी हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार माने जाते हैं। हिन्दी नाटक साहित्य में प्रसाद के आगमन से प्रसाद युग का सुत्रपात हुआ। त्याग और बलिदान की भावना से ओत–प्रोत प्रसाद के नारी पात्र भी पाठकों पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में समर्थ हुए हैं, मूलतः कवि होने के कारण प्रसाद के नाटकों में भी काव्याव्यकता का समावेश है। इन नाटकों में सुन्दर गीत योजना के साथ–साथ भाषा में अलंकारिकता एवं काव्याव्यकता साफ झलकती है, उनकी मौलिक प्रतिमा स्पष्ट दृष्टीगोचर होती है। प्रसाद की प्रमुख नाट्य कृतियों के नाम इस प्रकार हैंः 1. सज्जन (1910ई0) 2. कल्याणी परिणय (1912ई0) 3. प्रायश्चित (1912ई0) 4. करूणालय (1913ई0) 5. राज्यश्री (1918ई0) 6. विशाख (1921ई0) 7. आजातशत्रु (1922ई0) 8. जनमेजय का नागयज्ञ (1926ई0) 9. कामना (1927ई0) 10. स्कन्धगुप्त (1928ई0) 11. एक घुंट (1929ई0) 12. चन्द्रगुप्त (1931ई0) ध्रुवस्वामिनी (1934ई0)[1]

'सज्जन' का कथनांक महाभारत पर आधारित है, जब पाण्डव दुर्योधन से जुए में हारकर वनवास का जीवन व्यतित कर रहें थे तो एक बार दुर्योधन के मन में पाण्डवों के वनवास की दुर्दसा देखने की ईच्छा उत्पन्न हुई, किन्तु वह रास्ते में ही गन्धर्वराज चित्रसेन से उलझ गया। अंत में युधिष्ठिर के कहने पर अर्जुन दुर्योधन को चित्रसेन से छुड़ाकर लाता है। पाण्डवों का इस प्रकार दुष्ट के साथ भी 'सज्जनता' का व्यवहार 'सज्जन' नामक नाट्यकृति में चित्रित किया गया है।

कल्याणी परिणय का कथा फलक भी एक ऐतिहासिक अख्यान से जुड़ा हुआ है। इस नाट्य में चन्द्रगुप्त का सैल्युकश के साथ युद्ध एवं सैल्युकश की पुत्री के साथ परिणय का वर्णन मिलता है। चन्द्रगुप्त और कार्नेलिया का विवाह द्वारा प्रसाद ने देश और जाति की परिधि के घेरे को समाप्त कर दिया। वास्तव में लोक मंगल की ये भावना पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों दर्शनों में पायी जाती है।

प्रायश्चित 1914ई0 में प्रकाशित ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित हिन्दी का प्रथम दुखान्त नाटक है। इसमें इतिहास प्रसिद्ध जयचन्द और पृथ्वीराज के द्वेष का चित्रण करते हुए अन्त में जयचन्द द्वारा मुहम्मद गौरी को आमंत्रित करने की भूल का दुश्परिणाम दिखलाया गया है। अपनी इस भूल का प्रायश्चित करने के लिए जयचन्द अपना राज्य छोड़कर सन्यास ले लेता है। अंत में जमाता का वध एवं देशद्रोह पर पाश्चाताप करता हुआ पतित पावनी गंगा में कुदकर आत्म हत्या कर लेता है। इस प्रकार नाटक का अंत दुखान्त है। इसी नाटक से प्रसाद के नाटकों का शिल्प परिवर्तन प्रारम्भ हुआ।[2]

प्रसाद का चतुर्थ नाटक राज्यश्री पहला ऐतिहासिक नाटक है राज्यश्री में इतिहास प्रसिद्ध महराजा हर्ष वर्धन की बहन राज्यश्री के जीवन का चित्रण है। नाटक के सभी 22 पात्रों में राज्यश्री का ही चरित्र और व्यक्तित्व सबसे प्रभावी दिखलाया गया है। उसका विवाह कन्नौज के राज ग्रहवर्मा के साथ हुआ था। स्थाणेश्वर और कन्नौज के इस विवाह संबंध से मालवा और गौड़ आदि छोटे राज्य द्वेष रखते थे। इसी कटुता और राजनैतिक द्वेष का रूप हमें इस नाटक में मिलता है। साथ हीं बौद्ध धर्म का पतन को भी इस नाटक में दिखाया गया है। इस नाटक में इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय है।[3]

विशाख की रचना 1921ई0 में हुई। यह एक अर्ध ऐतिहासिक नाटक है। सुत्रों को जोड़ने के लिए प्रसाद जी ने कल्पना का सहारा लिया इसमें बौद्धो के पतन का प्रमाणिक इतिहास लक्षित है। इसमें चन्द्रलेखा के प्रति राजा नरदेव का कामुख व्यवहार, अत्याचार और प्रतिकार वर्णित है। इस नाटक का शिल्प शिथिल और वस्तु विन्यास भ्रामक है। इसमें दो प्रमुख बातें चित्रित हैः— 1. नायक—नायिका का विरह 2. प्रतिशोध। इस नाटक के रूप विधान से स्पष्ट हो जाता है कि प्रसाद प्राचीन परिपाटी के बाहर भागकर नई शैली के सृजन के लिए छटपटा रहे हैं। इस नाटक की भूमिका में उन्होनें लिखा हैः— मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित में से उन प्रकाण्ड घटनाओं को दिगदर्शन कराने की है, जिन्हानें हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने में बहुत प्रयास किया है।[4]

'आजातशत्रु' 1922ई0 में प्रकाशित ऐतिहासिक नाटक है जिसका नायक आजातशत्रु मगध नरेश बिम्बसार का पुत्र है। इस नाटक में वैवाहिक सम्बंधों से मगध, कोशल तथा कोशांबी का पारस्परिक परिवारिक संबंध है। त्रास्दी के गंभीर वातावरण में संपूर्ण नाटक में भय तथा करूणा का दिग्दर्शन है। पहले अंक में पदमावति के वध के लिए उदयन का तलवार निकालना, दूसरे अंक में शैलेन्द्र के द्वारा श्यामा का गला घोटना, आजातशत्रु का युद्ध के लिए ससैन्य प्रस्थान करना, बिम्बसार का लड़खड़ाकर गिरना नाटक में भय तथा करूणा की सृष्टि करते हैं। इस प्रकार आजातशत्रु परिवारिक कलह को उभारने वाला नाटक है।[5]

जनमेजय का नागयज्ञ नाटक में आर्यों और नाग जाति के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक के कथा उनके पुराणों में मिलती है, प्रसाद जी ने अनेक पुराणों का मंथन करके 'जनमेजय का नागयज्ञ' की रचना की है।

'कामना' प्रसाद जी की ऐतीहासिक परम्परा से हटकर एक पूर्ण प्रतीकात्मक नाटक है। नाटक मानव जाति के उस जीवन से आरंभ होता है जिसमें लोगों को प्रकृति से प्रेम था। विस्तृत वन प्रदेश, जल प्रपात, फलों से लदे वृक्ष, गायों के झुंड, धवल धुप चाँदनी रात तथा फूलों का द्वीप से नाटक का रंगभूमि रची गयी है। समस्त द्वीपवासी प्रेम पूर्वक रहते हैं उपासना मंदिर में पूजा करती हैं। इस मंदिर की व्यवस्थापिका कामना है। कालान्तर में विलास नामक परदेशी विदेश से आता है जो आधुनिक सभ्यता का प्रतिनिधि, स्वर्ण और मदिरा को संदेश वाहक द्वीप वाली जनता को दिग्भ्रमित और पतित करता है। कामना के मन में वह शासन के प्रति आकर्षक उत्पन्न करता है परिणाम स्वरूप कामना सत्पथ से विचलित होकर विलास और अनाचार में लिप्त हो जाती है।

स्कन्धगुप्त प्रसाद का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। नाटक की कथा में उज्जयिनी के शासक कुमार गुप्त की दो रानियाँ हैं। बड़ी का नाम देवकी और छोटी का नाम अनन्त देवी है। देवकी का पुत्र स्कंधगुप्त और अनन्त देवी का पुरगुप्त है। अनन्त देवी महामात्य के मदद से षड़यंत्र द्वारा अपने पति कुमार गुप्त की हत्या करवा देती है और अपने पुत्र पुरगुप्त को उसका उत्तराधिकारी घोषित करवा कर देवकी की हत्या का षड़यंत्र रचती है। स्कन्धगुप्त को पिता की मृत्यु का समाचार युद्ध भूमि में मिलता है। वह आकस्मिक रूप से पहुॅचकर अपनी माँ की रक्षा करता है।[6]

एक घूंट प्रसाद जी द्वारा रचित एक एकांकी है जिसमें स्त्री पुरूष के प्रेम को विषय वस्तु बनाया गया है चन्द्रगुप्त जयशंकर प्रसाद द्वारा 1931ई0 में रचित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक है। जिसकी कथा भारत पर सिकन्दर के आक्रमण तथा मगध में नन्द वंश के पराभव एवं चन्द्रगुप्त मौर्य के राजा बनने की ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ी है। प्रसाद जी ने जिस समय इस नाटक की रचना की उस समय हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था किन्तु देश में स्वतंत्रता आन्दोलन चल रहा था। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारत आजाद होने के लिए प्राणपण से संघर्ष कर रहा था। प्रसाद जी ने साहित्यकार के दायित्व का निर्वाह करते हुए भारतीय इतिहास के उस कालखण्ड को नाटकीय घटनाक्रम से प्रस्तुत किया जिसमें आचार्य चाण्क्य के मार्गदर्शन में चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरा। इस प्रकार चन्द्रगुप्त नाटक राष्ट्रीयता की भावना से सर्वत्र ओत प्रोत है जो संपूर्ण भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखने का इच्छुक है। चन्द्रगुप्त नाटक की प्रसिद्ध गीत अलका ही गाती है और जन साधारण को देश की रक्षा के लिए सन्नद्ध तैयार करती है।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयं प्रभा समुज्जवला, स्वतंत्रता पुकारती ।।
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ हैं, बढ़े चलो बढ़े चलो।।

धुवस्वामिनी प्रसाद जी की बहुचर्चित अंतिम नाट्य कृति है जिसकी कथा गुप्त वंश की यशस्वी सम्राट समुद्रगुप्त के पुत्र चन्द्रगुप्त के काल से संबंधित है। इस कृति में प्रसाद जी ने ऐतिहासिक कथावस्तु के आधार पर नारी के प्रेम विवाह और मोक्ष की समस्या को चित्रित किया है।[7]

प्रसाद जी के कथा साहित्य एवं उपन्यास का भी नाटक एवं काव्य साहित्य की भांति क्रमिक विकास हुआ है। उनके पॉच कहानी संग्रह छाया (1912ई0), प्रतिध्वनी (1922ई0), आकाशदीप (1929ई0), ऑधी (1931ई0) और इन्द्रजाल (1936ई0) प्रकाशित हुए। कुल मिलाकर 69 कहानियाँ इन संकलनों में संकलित की गई। उनकी कहानियों में अनुभूति की तीव्रता, काव्यत्कता, प्रेम चित्रण, प्रकृति निरूपण एवं कल्पना की प्रचुरता विद्यमान है। उनकी कुछ कहानियों में ऐतिहासिक देश काल एवं वातावरण की सफल प्रस्तुती की गई है। प्रेम करूणा, त्याग, बलिदान इनकी कहानियों के विषय है उन्होंने उच्च कोटि के नारी चरित्र अपनी कहानियों में प्रस्तुत किए हैं। उनकी कुछ उल्लेखनीय कहानियॉ है– पुरस्कार, इन्द्रजाल, आकाशदीप, ममता, मधुवा, देवरथ, बेड़ी, प्रतिध्वनि, ऑधी, सालवती आदि। इसके साथ ही साथ इन्होंने उपन्यासो की रचना करके भी ख्याति अर्जित की है। उन्होंने कंकाल (1929ई0) तथा तितली (1934ई0) नामक दो उपन्यास की रचना की है। इरावती नामक एक अधूरा उपन्यास भी उन्होंने लिखा है जिसे वे अपनी अकाल मृत्यु के कारण पूरा नहीं कर सके। कंकाल में प्रसाद जी ने व्यक्ति के स्वतंत्रता का समर्थन किया है जबकि तितली के द्वारा प्रेम के आदर्श स्वरूप की व्याख्या की है साथ ही इसमें ग्रामीण समस्याओं का भी चित्रण किया गया है।

निश्चय ही प्रसाद के रूप में हिन्दी को एक महान साहित्यकार की कृतियों का रसास्वादन करने का अवसर मिला है।

संदर्भ सूची

1. प्रतियोगिता साहित्य हिन्दी लेखक– अशोक तिवारी पृष्ठ सं0 204
2. प्रसाद साहित्य में काव्येतर ललित कलाएॅ– अनिल चौधरी पृष्ठ सं0 56–57
3. राज्यश्री द्वितीय अंक– जयशंकर प्रसाद पृष्ठ सं0 47
4. जयशंकर प्रसाद विशाख परिचय पृष्ठ सं0 07
5. प्रसाद साहित्य में काव्येतर ललित कलाऐं पृष्ठ सं0 61
6. डॉ0 जग्न्नाथ प्रसाद शर्मा– प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन पृष्ठ सं0 132
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास– अशोक प्रकाशन पृष्ठ सं0 149